होलिका दहन के अवसर पर

१०-३-९०

छाया पुरूष सिद्धि साधना

तांत्रिकों के लिए होली का अवसर एक सिद्धिप्रद अवसर माना गया है, और इस रात्रि को यदि दुर्लभ तांत्रिक साधना भी की जाय तो जीवन में निश्चय ही पूर्ण सिद्धि और सफलता प्राप्त होती है।

ऐसी साधनाओं में छाया पुरुष साधना प्रमुख है जो कि इस बार होलिका दहन की रात्रि को सम्पन्न की जा सकती है।

एक सारगर्भित गोपनीय महत्वपूर्ण और दुर्लभ साधना।

इस बार होलिका दहन १०-३-९० को सम्पन्न हो रहा है, शास्त्रों के अनुसार यह समय रात्रि को ११ बज कर १८ मिनट के आस-पास सम्पन्न हो रहा है।

यों तो होली की पूरी रात्रि ही साधकों के लिए स्वर्णिम अवसर है, जब साधक किसी भी प्रकार की तांत्रिक साधना सम्पन्न कर सकता है। तांत्रिक ग्रंथों में बताया गया है, कि यदि कोई साधना वर्ष के अन्य दिनों में संपन्न न हो रही हो तो उसे चाहिए कि होली की रात्रि को वह साधना सम्पन्न कर दें।

छाया पुरुष साधना

जीवन की दुर्लभ और महत्वपूर्ण साधनाओं में छाया पुरुष साधना भी है, इस साधना को सम्पन्न करने पर व्यक्ति को भूतकाल और भविष्यकाल का ज्ञान तो हो ही जाता है, साथ ही साथ छाया पुरुष के माध्यम से वह किसी के भी भूतकाल को स्पष्ट कर सकता है, कि उसने अब तक के जीवन में क्या क्या कार्य किये है, किस प्रकार का जीवन जीया है और उसके जीवन के वे कौनसे गोपनीय तथ्य है, जो अभी तक प्रकाश में नहीं आ सके है।

यह साधना "कर्ण पिशाचिनी साधना" के समान है, जिसे सिद्ध करने पर व्यक्ति को 'छाया पुरुष सिद्धि' प्राप्त हो जाती है, और वह किसी भी व्यक्ति को देखते ही उसका भूतकाल ज्यों का त्यों उसके सामने स्पष्ट कर देता है, यहां तक कि उसके जीवन की छोटी से छोटी और गोपनीय से गोपनीय घटना भी स्पष्ट करने में वह समर्थ होता है।

इससे भी बढ़ कर बात यह है कि यह साधना शीघ्र [illegible] और तुरन्त अनुकूल फल देने में समर्थ है। आवश्यकता है, इसे होली की रात्रि को पूर्ण करने की,

और पूर्णता के साथ साधना सम्पन्न करते हैं।

होली की रात को साधक लगभग १० बजे स्नान कर काली धोती पहिन कर काले आसन पर दक्षिण दिशा की ओर मुंह कर बैठ जाय और अपने सामने काले तिलों की ढेरी जमीन पर बना ले और फिर उस पर "छाया पुरुष यंत्र" को स्थापित कर दें, यह यंत्र एक विशेष प्रकार से निर्मित होता है, और साधक के लिए जीवन भर उपयोगी बना रहता है।

फिर सिन्दूर से इस छाया पुरुष यंत्र पर ९ बिन्दियां लगायें और प्रत्येक बिन्दी लगाते समय "ॐ छाया पुरुषाय सिद्धयै नमः" शब्द का उच्चारण करें। इसके पश्चात् इसके सामने एक तेल का दीपक लगा दें, और स्वयं "छाया पुरुष माला" से संकल्प लेकर इक्यावन माला मंत्र जप करें।

संकल्प में साधक अपने दाहिने हाथ में जल लेकर कहे कि मैं आज होली की रात्रि को अमुक गोत्र अमुक पिता का पुत्र अमुक नाम का साधक गुरु आज्ञा से छाया पुरुष सिद्धि प्राप्त करने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न कर रहा हूं जिससे मुझे सिद्धि प्राप्त हो और जिसके माध्यम से मैं किसी भी पुरुष या स्त्री को देखते ही उसके संपूर्ण भूतकाल को प्रामाणिकता के साथ जान सकूं – ऐसा कह कर वह हाथ में लिया हुआ जल जमीन पर छोड़ दें।

इसके बाद अपने ललाट पर सिन्दूर का तिलक करें और सामने जो तेल का दीपक लगाया हुआ है, उसमें से थोड़ा तेल हाथ में लेकर अपने पैरों के दोनों तलवों पर लगा दें और वहीं पर बैठे बैठे स्वच्छ पानी से हाथ धो लें।

इसके बाद हाथ जोड़ कर छाया पुरुष यंत्र के सामने ध्यान करें।

ध्यान

ॐ कालपुरुषायं भैरवायै छाया पुरुष दंष्ट्राय प्रत्यक्ष दर्शय दर्शय गोचर अगोचर भूत भविष्य आगत अनागत सिद्धि वै नमः।

उपरोक्त ध्यान का नौ बार उच्चारण करें और इसके बाद पुनः जलते हुए तेल के दीपक में से थोड़ा सा तेल ले कर दोनों तलवों पर लगा दें।

इसके बाद छाया पुरुष माला से निम्न मंत्र का जप सम्पन्न करें। इसमें रात्रि को ५१ माला मंत्र जप करने का विधान है, जिससे कि पूर्ण सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

छाया पुरुष मंत्र

क्लीं छाया पुरुषायं फट्।

यह मंत्र छोटा सा होते हुए भी अत्यन्त महत्वपूर्ण और शीघ्र सिद्धिदायक है, और ज्यादा से ज्यादा साधक एक या डेढ़ घण्टे में यह मंत्र जप संपन्न कर लेता है।

दूसरे दिन साधक प्रातः काल जल्दी उठ कर वह छाया पुरुष यंत्र और छाया पुरुष माला जहां तीन रास्ते मिलते हों, ऐसे स्थान पर वह यंत्र और माला रख दें और वापिस मुड़ कर घर आ जाय, पर यह कार्य रात्रि को ही संपन्न हो जाना चाहिए। तिराहे अर्थात् जहां तीन रास्ते मिलते हों ऐसे स्थान पर यंत्र और माला रखने के बाद लौटते समय वापिस मुड़ कर नहीं देखे, और घर आ कर स्नान कर ले।

ऐसा करने पर उसे छाया पुरुष सिद्धि प्राप्त हो जाती है और वह यदि किसी को भी देखता है और उपरोक्त मन्त्र का तीन बार उच्चारण करता है, तो उसके भूतकाल का एक एक क्षण उसके कानों में छाया पुरुष कह देता है।

इस साधना में किसी प्रकार का दोष भय नहीं है, यह सौम्य साधना है, इसे पुरुष या स्त्री कोई भी संपन्न कर सकता है।

△